प्रभु यीशु की दिव्यता
बाइबल का प्रमाण

https://jesus-is-god-proof.com/

दक्षिण फिलाडेल्फिया में, जब मैं आठ साल का लड़का था, मुझे अपने स्वर्गीय पिता परमेश्वर से प्यार हो गया।

मुझे कभी यह समझ में नहीं आया कि क्यों यीशु को परमेश्वर बनना था क्योंकि मुझे केवल पिता परमेश्वर की आवश्यकता थी। मैं जानता था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, लेकिन मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह पूरी तरह से ईश्वर है।

वर्षों बाद, मैंने बाइबल में पढ़ा कि स्वयं प्रभु यीशु और पवित्र शास्त्र बाइबल यीशु के लिए पूर्ण दिव्यता का दावा करते हैं*!* मैंने इस पुस्तक में यीशु की दिव्यता के बारे में लिखा है। यह आपके जीवन को वैसे ही बदल दे जैसे इसने मेरा जीवन बदल दिया है।

~ पास्टर बॉब

यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

> . . . क्योंकि जब तक तुम यह नहीं मानते कि मैं वह हूँ जो मैं होने का दावा करता हूँ, **तो तुम अपने पापों में मर जाओगे।** ~ यीशु (यूहन्ना 8:24)

प्रभु यीशु की पूर्ण दिव्यता को किसी भी गैरमसीही धर्म द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है। कुछ मसीही लोग भी इस शिक्षा पर संदेह करते हैं ।

हर किसी का उद्धार इस बात पर निर्भर करता है कि वे **यीशु** से कैसे संबंधित हैं, केवल उसकी शिक्षाओं से नहीं। पमेश्वर पिता और यीशु मसीह उद्धार के लिए **यीशु में विश्वास** की मांग करते हैं (यूहन्ना 3:16, 3:36, प्रेरितों के काम 4:12)।

यदि हम **यीशु** को **परमेश्वर** के रूप में नहीं देखेंगे तो हम उस पर और बाइबल में उसके वचनों पर भरोसा कम ही कर पाएंगे।

यीशु ने खुद के लिए जो दावा किया उसे देखते हुए यीशु या तो झूठा, या पागल, या शैतान या ईश्वर हो सकता है!

परमेश्वर चाहता है कि उसके अनुयायी यीशु में अपने विश्वास की व्याख्या दूसरों के आगे करने में सक्षम हों :

> मसीह को प्रभु जान कर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे **उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो,** पर नम्रता और आदर के साथ। (1 पतरस 3:15).

दोहराने लायक बात : सभी का उद्धार इस बात पर निर्भर करता है
कि वे यीशु से कैसे संबंधित हैं।

परमेश्वर पिता ने यीशु को भेजा ताकि केवल वे लोग **जो यीशु पर विश्वास करते हैं, अनंत जीवन पाएं :**

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)

यीशु ने उसी अध्याय में कहा :

> जो **पुत्र को मानता है,** उसका अनन्त जीवन है; लेकिन जो **पुत्र का आज्ञा पालन** नहीं करता है, वह जीवन नहीं देखेगा, बल्कि परमेश्वर का क्रोध उस पर ही रहता है । (यीशु ने कहा कि जॉन 3:36 में)

केवल कोई मानव नबी या शिक्षक इस तरह के दावे नहीं कर सकता है ना उसे करना चाहिए। एक मानव के लिए इस तरह के दावे परमेश्वर के खिलाफ ईशनिंदा होगा। यीशु को इस तरह के दावे करने के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था। (मरकुस 14:61-65)

यीशु ने यह भी दावा किया कि अकेले उस पर विश्वास करना ही पिता तक पहुँचने के लिए एकमात्र रास्ता है:

> मैं मार्ग, और सत्य और जीवन हूं; बिना मेरे द्वारा कोई भी पिता के पास नहीं आता। (यूहन्ना 14:6)

यीशु की बात करते हुए, प्रेरित लूका ने लिखा है :

> और किसी और में उद्धार नहीं है; क्योंकि स्वर्ग के नीचे **कोई दूसरा नाम नहीं** है जिसे लोगों के बीच दिया गया है जिसके द्वारा हमें बचाया जाना चाहिए। (प्रेरितों के काम 4:12)

यदि हम यीशु को परमेश्वर के रूप में नहीं देखते हैं, तो हमारा उस पर और बाइबल में उसके वचनों पर भरोसा करने और उनके वचनों का पालन करने की संभावना कम हो जाती है।

> ... ताकि पिता का सम्मान करते हुए भी सभी पुत्र का आदर करेंगे। **जो पुत्र का आदर नहीं करता है, वह उस पिता का आदर नहीं करता** जिसने उसे भेजा था। (यूहन्ना 5:23)

बाइबल का प्रमाण

सब कुछ कहने, सुनने, और कर लेने के बाद यीशु की दिव्यता के लिए बाइबल का प्रमाण सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है।

वास्तव में, यीशु की दिव्यता को इस बाइबल-सम्मत पहली बिंदु से ही उचित ठहराया जा सकता है :

यीशु ने पृथ्वी पर यहूदियों से तथा स्वर्ग में स्वर्गदूतों से उपासना करना स्वीकार किया।

बाइबल के प्रमाण ये हैं :

1. यीशु ने पृथ्वी पर लोगों की उपासना स्वीकार की

2. स्वर्ग में स्वर्गदूतों और प्राचीनों के द्वारा यीशु की उपासना की जाती है

3. यीशु को बाइबल में सचमुच परमेश्वर कहा गया है

4. यीशु परमेश्वर पिता के गुणों, कार्यों और उपाधियों का दावा करता है

5. यीशु ने इस तरह बात की जैसे वह परमेश्वर हो

परमेश्वर के अलावा किसी और की आराधना करना गलत है

बाइबिल के अनुसार, **केवल परमेश्वर सर्वशक्तिमान पृथ्वी पर या स्वर्ग में किसी के द्वारा आराधना करने योग्य है।** दस आज्ञाओं में से पहली आज्ञा मूर्ति पूजा करने से मना करती है। परमेश्वर ने झूठे देवताओं की पूजा करने के लिए अपने प्रिय इज़राइल सहित पूरे राष्ट्रों को नष्ट कर दिया।

जब प्रेरित पतरस ने प्रेरितों के काम 10 में कुर्नेलियस के घर में प्रवेश किया, तो कुर्नेलियस

> उसके पैरों पर गिर गया और **उसकी उपासना की**. लेकिन पतरस ने उसे उठाया, कहा, "खड़े हो जाओ; मैं भी सिर्फ एक मनुष्य हूं । (प्रेरितों के काम 10:25-26)

जब प्रेरित यूहन्ना उस प्रकाशन से अभिभूत महसूस कर रहा था जो उसे स्वर्ग में उस दूत से मिल रहा था जिसने उसका मार्गदर्शन किया था, तो उसने लिखा :

> **मैं उस देवदूत के चरणों में प्रणाम *(उपासना)* करने के लिए नीचे गिर गया** जिसने मुझे ये बातें दिखाईं। लेकिन उसने मुझसे कहा, **ऐसा मत करो**। मैं तुम्हारा और तुम्हारे भाइयों का एक साथी सेवक हूँ जो नबियों और उन लोगों का है जिन्होंने इस पुस्तक के वचनों पर आँख ली है। **परमेश्वर की उपासना करें**। (प्रकाशितवाक्य 22:8-9)

यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 19:10 में **फिर से** एक ही बात कही थी और दूत ने बिलकुल वही बात फिर से कही : वैसा मत करो*!* परमेश्वर की उपासना करो*!*

फिर भी, पृथ्वी पर और स्वर्ग, दोनों स्थानों में, यीशु लोगों और स्वर्गदूतों की आराधना स्वीकार करता है। ऐसा करने का अर्थ है कि यीशु या तो ईश्वर है या वह ईश्वर की नज़र में एक बुरा व्यक्ति है। बाइबल के साक्ष्यों पर नजर डालते हैं...

यीशु ने पृथ्वी पर लोगों की उपासना स्वीकार की

उसके प्रेरितों द्वारा: और जो लोग नाव में थे, **उन्होंने उसकी उपासना करते** हुए कहा, "तुम निश्चित रूप से परमेश्वर के पुत्र हो!" (मत्ती 14:33)
और देखो, यीशु ने उनसे मुलाकात की... । और वे ऊपर आए और उसके पैर पकड़ लिया और **उसकी उपासना की**. (मत्ती.28:9)
जब उन्होंने उसे देखा, **तो उन्होंने उसकी उपासना की** । (मत्ती 28:17)
उनके शिष्य **उसकी उपासना करने के बाद**, . . (लूका 24:52)
थोमा ने उसे ईश्वर (परमेश्वर) कहा : संदेह मत करो और विश्वास करो." थोमा ने उससे कहा, **"मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर !"** (यूहन्ना 20:27-29)
याद रखें, ये वे लोग हैं जो तीन साल तक यीशु के साथ रहते थे और उसे मरते हुए देखा था। **अगर यीशु सिर्फ एक आदमी होते, तो वे इसे जानते!**

चंगाई प्राप्त व्यक्ति : और उसने कहा, "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं। और **उसने उसकी उपासना की** (यूहन्ना 9:38)

एक अच्छा यहूदी कभी किसी को उसकी उपासना या पूजा करने की इजाजत नहीं देगा । वह **ईशनिंदा के लिए** (दिव्य होने का दावा करने के लिए) **पत्थरवाह करके मारा जा सकता है।**

मूर्तिपूजक वैज्ञानिकों द्वारा : तीन बुद्धिमान लोगों ने उसके तारे को देखा और एक लंबा सफर तय किया ताकि उसकी उपासना कर सकें (मत्ती 2:2)।
बाद में, जब उन्होंने उसे पा लिया तो वे जमीन पर गिर गए और **उसकी उपासना की।** (मत्ती 2:11)

यदि यीशु परमेश्वर नहीं है और वह लोगों को अपने उपासना करने की अनुमति देता है, तो वह झूठा या पागल या नरक से आया शैतान होगा, या उपरोक्त सभी होगा !

स्वर्ग में स्वर्गदूतों और प्राचीनों के द्वारा यीशु की उपासना की जाती है

यीशु के दूसरे आगमन की बात करते हुए, इब्रानियों 1:6 घोषणा करता है :

और जब वह पहिलौठे को फिर से दुनिया में ले आता है, तो वह कहता है, "परमेश्वर के सभी स्वर्गदूत उसको दंडवत करें हैं।" (उसकी उपासना कर रहे हैं)

तब मैंने देखा, और मैंने सिंहासन और जीवित प्राणियों और **प्राचीनो** के चारों ओर कई **स्वर्गदूतों** की आवाज सुनी; और उनकी संख्या लाखों-करोड़ो लोगों की थी। और एक ऊंची आवाज के साथ कह रहे हैं, "वध किया हुआ **मेमना** ही सामर्थ्य और धन और ज्ञान और शक्ति और **आदर और महिमा और धन्यवाद** के योग्य है **"** (प्रकाशितवाक्य 5:11-12)

फिर मैंने स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे और समुद्र की **सब सृजी हुई वस्तुओं को ,** और सबकुछ को हो उनमे हैं , कहते सुना , "**जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेमने का** धन्यवाद और आदर और महिमा और राज्य युगानुयुग रहे । और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों ने **गिरकर दंडवत किया। "** (प्रकाशितवाक्य 5:13-14)

ध्यान दें कि परमेश्वर पिता या मेमने को यीशु को आराधना में जो कुछ भी दिया जाता है, उसमे **कोई भेद नहीं** किया गया है।

जब भी अशुद्ध आत्माओं ने उसे देखा, वे **उसके सामने गिर जाते** और चिल्लाते, "तुम परमेश्वर के पुत्र हो!" (मरकुस 3:11)

बाइबल में दुष्टात्माओं को कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति के सामने गिरते हुए नहीं दिखाया गया है। जो लोग उन्हें बाहर निकाल सकते हैं उनके सामने भी नहीं।

"तुम हमसे क्या चाहते हो, परमेश्वर के बेटे ?" वे चिल्लाते थे । "क्या **आप यहां नियत समय से पहले हमें यातना देने के लिए आए हैं?** " (मत्ती 8:29)

परमेश्वर के अलावा कौन है जो समय के अंत में दुष्टात्माओं को यातना दे सकता है?

यीशु को बाइबल में सचमुच परमेश्वर कहा गया है

शुरुआत में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और **वचन परमेश्वर था** *(यूहन्ना 1:1)*

और **वचन देहधारी हुआ** और हमारे बीच में निवास किया . *(यूहन्ना 1:14)*

मसीह यीशु, जो, **हालांकि वह परमेश्वर के स्वरूप में अस्तित्व में** था, फिर भी परमेश्वर के **साथ समानता** को अपने वश में रखने की बात नहीं समझा *(फिलि 2:5-7)*

मसीह में, **दिव्यता की सारी परिपूर्णता** शारीरिक रूप में रहती है। (कुलुस्सियों 2:9)

पिता के संबंध में यीशु की बात करते हुए, इब्रानियों 1:3 घोषणा करता है :

और वह अपने पिता की महिमा और उसके स्वभाव का सटीक प्रतिनिधित्व है, और **उसकी** शक्ति के **वचन से सभी चीजों को कायम रखता है।**

और स्वर्गदूतों के बारे में वह *[पिता]* कहता है, *"*जो अपने स्वर्गदूतों हवाओं और उसके मंत्रियों आग की लौ बनाता है,*"* लेकिन **बेटे के बारे में कहता है, "आपका सिंहासन, हे परमेश्वर,** हमेशा-हमेशा के लिए है*...."* *(*इब्रानियों *1:7-8)*

हमारे लिए एक बच्चा पैदा हुआ है*...* और उसे **शक्तिशाली परमेश्वर, अनन्त पिता,** शांति के राजकुमार कहा जाता है *(*यशायाह *9:6:)*

एक कुंवारी गर्भ धारण करेगी और एक बेटे को जन्म देगी, और वे उसे इम्मानुएल कहेंगे, जिसका अर्थ है ***"*परमेश्वर हमारे साथ ।*"*** *(*मत्ती *1:23)*

यीशु परमेश्वर पिता के गुणों, कार्यों और उपाधियों का दावा करता है

यीशु ने अपने लिए सब कुछ बनाया :

क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी याअनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, **सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।** (कुलुस्सियों 1:16)

केवल परमेश्वर ही अपने लिए सब कुछ रचता है:

यीशु के पास सभी अधिकार हैं :

स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी अधिकार मुझे दिए गए हैं। (मत्ती 28:18)

यीशु ने पाप क्षमा किया : यीशु ने उस लकवाग्रस्त से कहा; "हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए। औरदेखो, कई शास्त्रियों ने सोचा, कि "यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।" (मत्ती 9:1-3)

केवल परमेश्वर ही पाप क्षमा करता है ।

यीशु ने लोगों को पाप से बचाया : वह एक बेटे को जन्म देगी । यीशु, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा। (मत्ती 1:21)

इसलिए **वह उन लोगों को बचाने में पूरी तरह से सक्षम है** जो उसके माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं, क्योंकि वह हमेशा उनके लिए प्रार्थना करता रहता है। (इब्रानियों 7:25)

यीशु और पिता अल्फा और ओमेगा के शीर्षक का दावा करते हैं :

"मैं अल्फा और ओमेगा हूँ," प्रभु परमेश्वर कहते हैं, "जो है, और जो था, औरजो आने वाला है, सर्वशक्तिमान। (प्रकाशितवाक्य 1:8)

"देखो, **मैं जल्द ही आ रहा हूं...** । मैं अल्फा और ओमेगा, पहला और आखिरी, शुरुआत और अंत हूं । (पकाशितवाक्य 22:12-13)

केवल यीशु जल्द ही आ रहा है!

परमेश्वर और यीशु दुष्टों के खिलाफ बदला लेते हैं:

प्रभु कहते हैं, कभी भी अपना बदला न लें, प्रियो , लेकिन परमेश्वर के क्रोध के लिए जगह छोड़ दें, क्योंकि यह लिखा है, प्रतिशोध मेरा है, मैं बदला चुका दूंगा। (रोमियो 12:19)

परमेश्वर का धर्मी न्याय (2 थिस्सलुनीकियों 1:5) अंतिम समय में किया जाता है :

उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा। (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-8)

किसके दूत ???

परमेश्वर और यीशु उद्धारकर्ता के शीर्षक का दावा करते हैं :

मैं... प्रभु हूं और **मेरे अलावा कोई उद्धारकर्ता नहीं है।** (यशायाह 43:11)

पौलुस की ओर से जो हमारे **उद्धारकर्ता परमेश्वर**, और हमारी आशा-स्थान मसीह यीशु की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है (1 तीमु 1:1)

. . . हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह . (2 पतरस 1:11)

. . .**उद्धारकर्ता परमेश्वर** की आज्ञा के अनुसार हमारे उद्धारकर्ता... पिता परमेश्वर और **मसीह यीशु हमारे उद्धारकर्ता** की ओर से अनुग्रह और शांति । (तीतुस 1:3-4)

ध्यान दें कि इन दो वचनो (तीतुस 1:3-4) में, परमेश्वर पिता को उद्धारकर्ता कहा गया है और यीशु को उद्धारकर्ता कहा गया है।

परमेश्वर पिता को पुराने नियम में 13 बार उद्धारकर्ता कहा गया है। परमेश्वर और यीशु दोनों को नए नियम में कुल 24 बार उद्धारकर्ता कहा गया है। कभी-कभी पिता को उद्धारकर्ता कहा गया है और कभी-कभी यीशु को उद्धारकर्ता कहा गया है।

यीशु ने इस तरह बात की जैसे वह परमेश्वर हो

यीशु ने पिता परमेश्वर के साथ एक होने का दावा किया :

"मैं **और पिता एक हैं।** फिर यहूदियों ने उसे पत्थर मारने के लिए पत्थर उठाए... । यहूदियों ने कहा, "हम तुम पर इनमें से किसी के लिए पत्थरवाह नहीं कर रहे हैं,"**लेकिन ईशनिंदा के लिए, क्योंकि तुम , एक सामान्य इंसान होकर , परमेश्वर होने का दावा करते हो** **(**यूहन्ना 10:30-33)

यहूदियों ने यीशु को मारने की कोशिश की क्योंकि उसने कहा कि परमेश्वर उसका पिता है , जिससे कि वह **स्वयं को परमेश्वर के बराबर बना रहा** था । (यूहन्ना 5:17-18)

यीशु ने परमेश्वर के पवित्र नाम का दावा किया है : "मैं तुम्हें सच कहता हूँ," यीशु नेजवाब दिया, "इब्राहीम के पैदा होने से पहले, **मैं हूँ*!*"** इस पर, वे उसे पत्थर मारने के लिए पत्थर उठाया... । (यूहन्ना 8:58-59)

निर्गमन 3:14 में "मैं हूँ" ईश्वर का पवित्र नाम है। ये सभी यहूदी जानते थे और जो भीइसका इस्तेमाल करेगा, उस पर पत्थरवाह किया जा सकता था।

यीशु कहते हैं कि उन पर विश्वास करने से अनंत जीवन मिलता है : . . . और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नष्ट नहीं होंगे ... (यूहन्ना 10:28)

हर व्यक्ति जो... मुझ पर विश्वास करता है कभी नहीं मरेगा । (यूहन्ना 11:26)

परमेश्वर पर विश्वास करो, मुझ पर भी विश्वास करो। (यूहन्ना 14:1)

यीशु ने सिखाया है क **...** सभी को पुत्र का सम्मान करना चाहिए क्योंकि इस रीति से वे पिता का सम्मान करते हैं. (यूहन्ना 5:23)

. . . क्योंकि यदि तुम विश्वास नही करते हो कि मैं वह हूँ, तो तुम अपने पापों मेंमर जाओगे। (यूहन्ना 8:24)

"मार्ग , सच्चाई और जीवन हूँ। मुझे छोड़कर पिता के पास कोई नहीं पहुँच सकता"

(यूहन्ना   14:6-7)

नबी, महान नैतिक शिक्षक, या प्रधान स्वर्गदूत?

कुछ लोग जो यीशु को परमेश्वर के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं, वे अक्सर कहेंगे कि यीशु सिर्फ एक महान नैतिक शिक्षक, एक पैगंबर (नबी), या शायद एक प्रधान स्वर्गदूत है।

यीशु उपरोक्त में से कोई नहीं हो सकता है, जैसा कि प्रसिद्ध लेखक और कैंब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. सी. एस. लुईस अपनी पुस्तक *Mere Christianity* में लिखा है : **"जो व्यक्ति केवल एक मनुष्य था और ऐसी बातें कह गया जैसे यीशु ने कही तो ऐसा व्यक्ति एक महान नैतिक शिक्षक नहीं हो सकता। वह या तो कोई पागल होगा... या फिर नरक का शैतान होगा। "**

- यदि यीशु एक महान नैतिक शिक्षक या **परमेश्वर** का नबी होता तो **वह जानबूझकर अपनी पहचान के बारे में झूठ क्यों बोलता कि वह परमेश्वर है ?**

- यदि वह एक पवित्र व्यक्ति या पवित्र स्वर्गदूत होता मनुष्यों को पृथ्वी और स्वर्ग में अपनी उपासना करने की अनुमति कैसे देता ?

- या कोई साधु या स्वर्गदूत लोगों से कैसे कह सकता है कि उन्हें उद्धार प्राप्त करने के लिए उस पर और परमेश्वर दोनों में **विश्वास** करना होगा ?

- कोई इंसान या दूत यह वचन कैसे दे सकता है कि **केवल वही** (परमेश्वर नहीं) उन्हें अनन्त जीवन दे सकता है ?

- कोई भी संत या स्वर्गदूत **परमेश्वर के शीर्षकों, विशेषताओं और कार्यों का दावा कैसे कर सकता है?**

नबी, महान नैतिक शिक्षक, या प्रधान स्वर्गदूत?

हर किसी को इस बारे में चुनाव करना है कि यीशु कौन है।

उसने जो कुछ कहा और किया और क्या किया और बाइबल उसके बारे में क्या कहती है :

यीशु या तो झूठा, पागल, शैतान ... या फिर स्वयं परमेश्वर हो सकता है!

आपके विचार से यीशु कौन है?
बुद्धिमानी से चुनें। आपका अनंतकाल आपके चुनाव पर निर्भर करता है।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है. (यूहन्ना 3:16; 3:36)

[यीशु को छोड़] और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें॥
(प्रेरितों के काम 4:12)

“मार्ग , सच्चाई और जीवन हूँ। मुझे छोड़कर पिता के पास कोई नहीं पहुँच सकता’’ (यूहन्ना 14:6-7)